महिन्याचा विचार

दिव्य जीवन कैसे जिये!

गुरूदेव के 'दिव्य जीवन' के सिद्धान्त का सार मुख्य रूप से यह है कि व्यक्ति को दिव्य जीवन यापन के लिए अपने घर, परिवार, कार्य–व्यापार इत्यादि को छोडने की आवश्यकता नहीं है। वस्तुत: जिसे छोडने की आवश्यकता है, वह है अहंकार कि 'मैं यह देह हूँ, मेरा अमुक नाम है, मैं यह हूँ' इत्यादि; इस प्रकार शरीर के प्रति मोह, स्वार्थ, रूचियों और अरूचियों इत्यादि के प्रति मोह।

आपके जीवन को जो दिव्य बनाता है, ब्रह्म द्वारा रचे हुए मानव–स्वभाव में जो दिव्यता से हीन पहलू है, उसको मिटा कर अपने वास्तविक दिव्य स्वरूप में स्थित रह कर उद्‌भासित होना दिव्य जीवन की साधना का यही मुख्य कार्य है।

जीवन को दिव्य बनाने के लिए आन्तरिक परिवर्तन की आवश्यकता है, बाह्य की नहीं। आपका ध्यान जो देह पर केन्द्रित है, मन पर केन्द्रित है, मन के विचारों, भावनाओं, उद्वेगों, इच्छाओं, कल्पनाओं और स्मृतियों पर केन्द्रित है, उसका वहाँ से स्थानान्तरण करके उच्चतर आयाम पर, एक भिन्न स्तर पर स्थित कर देना, जहाँ आपकी चेतना सदैव जागरूक रह कर इस भाव को दृढ करती रहे – ''अहं आत्मा निराकार: सर्वव्यापी स्वभावत:''(मैं स्वभाव से निराकार सर्वव्यापक आत्मा हूँ)।

यह दिव्य जीवन है। यह जीवन का मुख्य सिद्धान्त – वेद – वाक्य है। जिनका आपने त्याग करा है, वह है 'अहं' और 'मम' का भाव, देहाध्यास, देह से सम्बन्धित इच्छाओं की दासता, मन में उठने वाली वासनाओं की अनिच्छाओं और क्रोध आदि की भावनाएँ। मुक्ति तो इन्द्रियों की दासता से पानी है। इन्द्रियजन्य सुखों, मन के संकल्प–विकल्पों और अगणित इच्छाओं के दासत्व की अवस्था को समाप्त करना पडेगा। आप इस देह से इतर कुछ अन्य हैं – आप दिव्य हैं – यह जान लेना ही दिव्य जीवन है।

और, प्रतिदिन प्रात: से रात्रि तक निरन्तर इस स्वरूप–अवस्था को अभिव्यक्त करते रहना दिव्य जीवन जीना है। इसमें आपकी चेतना का आन्तरिक परिवर्तन ही अब बाह्य जीवन में अभिव्यक्त होने लगता है। अब आप निजी रूचियों–अरूचियों, पूर्व–धारणाओं, मान्यताओं और विचारों वाले सामान्य, तुच्छ व्यक्ति मात्र नहीं रह जाते, प्रत्युत् आपका व्यक्तित्व अब स्वयं को उदात्त और उत्कृष्ट ढंग से अभिव्यक्त करने लगता है, जो अपने में दिव्यता के गुण लिऐ हुए होता है – दिव्य विचार, दिव्य अनुभूति, दिव्यतापूर्ण कार्य और वचन। तब आपका प्रत्येक व्यवहार दिव्यता को लिए हुए होता है।

इस प्रकार यह आन्तरिक परिवर्तन ही बाह्य रूपान्तरण ले आता है; क्योंकि अब यह वही व्यक्ति कार्य नहीं कर रहा होता, प्रत्युत् अब एक भिन्न ही व्यक्ति, जागरूकता लिऐ हुए एक जागृत व्यक्ति हो जाता है। अब देह–बोध लिये हुए पहले वाला व्यक्ति न हो कर, स्वयं का ईश्वर से तादात्म्य स्थापित किये हुए अन्य ही व्यक्ति हो जाता है।

''मैं ईश्वर का ही एक अंश हूँ। दिव्यता मेरा वास्तविक गुण है। दिव्य होना मेरा स्वभाव है।''

DIVINITY IS YOUR BIRTHRIGHT

Transformation of consciousness from earth (body) consciousness to God consciousness is being brought about through a gradual process of absolute purification of the entire inner instrument because consciousness makes itself manifest through the mind. We have no idea of consciousness as such for we have not touched the depth of our being which is Consciousness itself. To us consciousness is only a concept or an idea. So we know of that Awareness as mental awareness and that is our definition of awareness. But this feeling, thinking awareness is expression through the mind. So first and foremost we have to work only through the mind. There is no other way of approaching that consciousness which is supramental, beyond and transcending the mind.

The spiritual process is a process of divesting the mind of all earthly associations, all gross associations, everything that is of the world, everything that is Rajas and Tamas. How can we do it?

- Swami Chidanandaji

Mantra is Power

There is an indescribable power in the mantra (God's name). Shakti is the energy or form of the mantra, i.e., the vibration form set up by its sound which carries a man to the devata that is worshiped. A mantra accelerates and generates the creative force. Mantra produces harmony in body and mind and awakens supernatural powers. If you repeat the mantra with concentration and meaning you will attain God-realisation quickly. The glory of the name cannot be established through the intellect. It can be realized only through devotion and faith and constant repetition. That which shines above all, having made the whole world equal to a blade of grass, full of the light of consciousness, bliss, purity - is only the sweet name of the Lord.

Sweeter than all sweet things, more auspicious than all auspicious things, purer than all pure things is the name of the Lord. OM is everything. OM is the name of God. Name is the bridge that connects the devotee with God. God's name is the way and the goal. Name is the weapon to destroy the mind. The name has the power to burn sins and desires.

As you repeat the mantra, feel that the Lord is seated in your heart, that purity is flowing from the Lord to your mind. The name serves as gate keeper; it never allows worldly thoughts to enter the mind. **-SWAMI SIVANANDA**

दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखा वृत्तांत

* ''दिव्य जीवन'' या मासिक पत्रिकेचा अंक (हार्ड आणि सॉफ्ट प्रत) सर्वांना वितरीत करण्यात आल्या.
* मे महिन्याचा सत्संग दि. १९ तारखेला डॉ.आनंद राव यांच्या निवास स्थानी संपन्न झाला.

पुणे शाखेचा पत्ता

श्री.नितीन देशपांडे
'ईशावास्य' प्लॉट नं. ४९/सायंतारा,
डी.एस.के. विश्व, धायरी,
पुणे ४११०६८, मो.नं. ९८५०९३१४१७

बुक पोस्ट

प्रति

दिव्य जीवन

वर्ष १४/अंक ६
जून २०१९

यंदा आपल्या शाखेच्या वतीने चौदावी राज्यस्तरीय आंतरशालेय निबंध स्पर्धा आयोजित करण्यात आली आहे. २५ जुलैपर्यंत राज्यभरातील शाळांनी इ. ८ वी ते १० वीच्या विद्यार्थी /विद्यार्थिनींचे निबंध पाठवायचे आहेत. स्पर्धेचा निर्णय १५ ऑगस्ट २०१९ रोजी सहभागी शाळांना आणि पारितोषिक विजेत्या विद्यार्थ्यांना कळविण्यात येणार आहे. त्यानुसार शाळांना स्पर्धेचे परिपत्रक पाठविण्यात आले आहे.

१४ जुलै रोजी आपल्या शाखेच्या वतीने शिवानंद स्मृती व्याख्यानाचे आयोजन करण्यात येते. यंदा सांगली येथील सौ. सीमा जमदग्नी यांना आपण ''गीतेतील भक्ती–प्रीती योग'' या विषयावर व्याख्यान देण्यासाठी निमंत्रित केलेले आहे.. सर्वांनी सदर व्याख्यानाचा अवश्य लाभ घ्यावा.